

परम पूज्य भगवती निर्मला देवी महात्म्य -  
मधुकर ठाकुर कृत



**The Supreme Goddess, Her Holiness  
Shri Mataji Nirmala Devi Mahatmya –  
Written by Madhukar Thakur**

Marathi | Hindi | English

# \* P R E F A C E \*

Dear Sahaja Yogies,

Jai Shree Mataji !!!

All of us have must have heard about Great (Sahaj) Yogi Gagangiri Maharaj of Gaganbawda / Khopoli as also narrated by Our Holy Mother Shree Mataji on many occasions.

It gives Great Joy to share with **World Sahaja Collective** an Unique publication namely "**Shree Nirmal Mahatmya**" (Meaning The Greatness of Shree Nirmala Devi) which depicts Glory and Grace of Our Holy Mother.

Interestingly, this Mini Praise booklet is composed / written in Marathi by Shri. Madhukar Thakur on basis of Orders (read instructions) from his Guru Shri Gagangiri Maharaj and was published in Mumbai on 21 March 1974.

This book is a Testimony to The Greatness of Great Disciple Shri Gagangiri Maharaj and Grace of Vishwavandita (Universally Revered) Divine Mother H. H. Shree Mataji Nirmala Devi !!!

Original copies of this book were shared with Pashan (Pune) collective by Shri Anant Damle from Mumbai in year 2010. A digitized version of the same is shared herewith for reference of Sahaja World.

## **Disclaimer:**

The Marathi images were OCR-ed and translated with the help of AI (Artificial Intelligence). If you can read and write Marathi, please go through this document and in case of any mistake, please email me at [aparna.gangopadhyay@gmail.com](mailto:aparna.gangopadhyay@gmail.com). I will correct the version.

**Please Note:** This is version I of the AI translated document. This document is open to changes. The Marathi translations are present in both Hindi and English.

**Jai Shri Mataji!**

# परम पूज्य श्री माताजी निर्मला देवी - चरण दर्शन



अखिल विश्वपरमात्म्यानें निर्माण केलेल्या वसुंधरेवर अत्यंत पावन अशौ " भारतभुमी " आहे या पवित्र भूमीवर दैवी शक्तींचा संचार असल्यानें त्यांच्या तपोबळावर विश्वाचे रक्षण होत आहे. "गगनबावडा-कोल्हापूर" येथे पांच हजार फूट उंच असणाऱ्या गगनगडावरील भव्य गुर्देत नाथपंथी महान तपस्वी " प. पू. स्वामी गगनगिरी महाराज" आहेत.

२४ मार्च १९६१ रोजी मला त्यांचे प्रथम दर्शन झाल्यापासून माझ्या अल्पबुद्धिनुसार माझ्याकडून जे कांहीं घडले जात आहे, ते महाराजांच्या कृपेमुळेच. २४ डिसेंबर ७५ रोजी प्रत्यक्ष महाराजांनी मला प. पू. निर्मला माताजींची प्रतिमा दिल्यावर तीन महिन्यांनी प. पू. माताजींच्या भेटीचा योग आला.

त्यानंतर माझ्या कल्पनेनुसार आणि अधिक माहिती गोळा करून २१ मार्च ७४ रोजी संपूर्ण माहात्म्य "बिल्डा क्रीडा केंद्र " या ठिकाणी जाहीर कार्यक्रमांत ऐकविले. माझ्या लेखणीतून ज्या अक्षरांची मांडणी झाली आहे, त्यांतून निघणाऱ्या अर्थाचा परिणाम "परमपूज्य भगवती निर्मलादेवी मातेच्या दिव्य चरणकमलावर समर्पण करीत आहे.

**निंदा अथवा बंदा । मी तर माझ्या छंदां ॥  
आहे गुरु नि माता । सारी तयांना चिंता ॥**

- मधुकर

# Behold! The Holy Lotus Feet



On this sacred Earth, created by the Supreme Being of the entire universe, there is a land known as "Bharat Bhumi," which is blessed with divine powers. It is through the intense penance of these divine powers that the protection of the universe is carried out.

At "Gaganbavda-Kolhapur," on the majestic Gagangad, which is 5,000 feet high, resides the great ascetic of the Nath tradition, "Param Pujya Swami Gagangiri Maharaj." Since I first had the privilege of meeting him on March 24, 1961, whatever has transpired from my limited intellect has only been due to his grace.

On December 24, 1975, after receiving the idol of Param Pujya Nirmala Mataji directly from Maharaj, I had the opportunity to meet Mataji three months later. Afterward, based on my thoughts and further gathering of information, I shared the complete significance on March 21, 1974, at a public event held at "Birla Krida Kendra."

The words conveyed through my pen are dedicated to the divine lotus feet of the most revered Bhagwati Nirmaladevi Mata.

**Criticism or praise, I remain focused on my inclinations,  
For I have Guru and Mother, and all concerns are theirs.**

**Madhukar**

# पवित्र चरण कमलों को देखें!



इस पवित्र पृथ्वी पर, जिसे सम्पूर्ण ब्रह्मांड के परमात्मा ने रचा है, एक भूमि है जिसे "भारतभूमि" कहा जाता है, और यह भूमि दिव्य शक्तियों से ओत-प्रोत है। इन्हीं तपस्वियों की तपशक्ति के कारण ब्रह्मांड का संरक्षण हो रहा है।

"गगनबावड़ा-कोल्हापुर" में स्थित 5000 फीट ऊंचे गंगगड पर नाथपंथी महान तपस्वी "प.पू. स्वामी गगनगिरी महाराज" निवास करते हैं। 24 मार्च 1961 को जब मैंने पहली बार उन्हें देखा, तब से मेरे अल्पबुद्धि के अनुसार जो कुछ भी हुआ है, वह महाराज की कृपा से ही संभव हुआ है। 24 दिसंबर 1975 को जब महाराज ने मुझे प.पू. निर्मला माताजी की प्रतिमा दी, तो तीन महीने बाद मुझे माताजी से मिलने का योग आया।

इसके बाद, मेरी कल्पना और अधिक जानकारी इकट्ठा करके 21 मार्च 1974 को "बिरला क्रीड़ा केंद्र" में एक सार्वजनिक कार्यक्रम में सम्पूर्ण माहात्म्य सुनाया। मेरे लेखन में जो शब्द हैं, उन शब्दों से निकलने वाले अर्थ को मैं परमपूज्य भगवती निर्मलादेवी माता के दिव्य चरणकमल में समर्पित करता हूँ।

**निंदा अथवा बंदा। मैं तो अपने छंदों में।  
है गुरु और माता। सारी चिंता उन्हीं की है।**

**मधुकर**

# प. पू. भगवती निर्मलादेवी महात्म्य

-:-

-: प्रारंभ :-

नमस्ते गणा गौरीसूता । नमस्ते सरस्वती माता ॥  
नमस्ते हे कूळदैवता । मंगल व्हावे ॥ १ ॥

गगनगिरी थोर नाथ । जोडिले तुम्हांसी मी हात ॥  
" निर्मलामाता " जगतात । धन्य त्या झाल्या ॥ २ ॥

प्रसन्न दर्शन आईचें । आकर्षण दिव्य नेत्रांचे ॥  
आगळे तेज स्वरूपाचे । वर्णवे नाही ॥३॥

हास्यमुद्रा मधूर वाणी । चित्त रमते ती ऐकूनी ॥  
त्रिकालज्ञ संपूर्ण ज्ञानी । माऊली आहे ॥४॥

जैशी देवी ती वेळोवेळी । भूवरी घावोनिया आली ॥  
नाना ठायीं रूपें घेतली । भू-तलावरी ॥ ५॥

प्रथम चक्र " मूलाधार" । " आदिशक्ति" स्वरूप थोर ॥  
सर्व कार्य केले त्यावर । देवीनें तेव्हां ॥ ६॥

चैतन्यमय श्रीगणेश । अग्रपूजेचा मान त्यास ॥  
चिरबालक गणाधीश । दैवत आहे ॥७॥

द्वितीय चक्र "स्वाधिष्ठान" । "सरस्वती" स्वरूप छान ॥  
वेद ब्रह्मदेवाकडून । निर्मूनी दिले ॥८॥

तृतीय चक्र " मणिपूर" । " लक्ष्मी" स्वरूप ते सुंदर ॥  
कार्य ते तीन चक्रावर । " विष्णुच्या " संगे ॥ ९ ॥

# P. P. Bhagwati Nirmaladevi Mahatmya

-::-

-: Beginning :-

Salutations to Gana Gaurisuta, Salutations to Saraswati Mata,  
Salutations to the ancestral deity, May auspiciousness prevail. (1)

Gagangiri, the great Nath, I fold my hands to you.  
"Nirmala Mata" is in the world, Blessed are those who have attained her. (2)

The divine vision of the Mother, The attraction of her divine eyes,  
Her unique radiant form, Cannot be described in words. (3)

Her smile, her sweet voice, The heart delights in listening to it,  
She is a knower of all three times, She is the Mother. (4)

As the goddess, she appeared at different times,  
Coming down to the earth,  
Taking many forms, On the earth's surface. (5)

The first chakra, "Muladhara," In the form of "Adi Shakti," is great,  
All tasks were accomplished upon it,  
By the Goddess at that time. (6)

The conscious Ganesh, Is honored with the foremost worship,  
The eternal child, the Lord of Ganas, Is a divine being. (7)

The second chakra, "Swadhishtana,"  
In the form of "Saraswati," is beautiful,  
The Vedas were created by Brahma,  
And were given to us. (8)

The third chakra, "Manipura," In the form of "Lakshmi," is beautiful,  
All work was done on these three chakras,  
With "Vishnu" accompanying them. (9)

# प. पू. भगवती निर्मलादेवी महात्म्य

-:-

-: प्रारंभ :-

नमस्ते गणा गौरीसुता । नमस्ते सरस्वती माता ॥  
नमस्ते हे कुलदेवता । मंगल हो ॥ १ ॥

गगनगिरी महान नाथ । जोड़ता हूँ तुम्हारे हाथ ॥  
"निर्मला माता" जग में । धन्य वे हुए ॥ २ ॥

प्रसन्न दर्शन माँ का । आकर्षण दिव्य नेत्रों का ॥  
अनोखा तेजस्वी स्वरूप । वर्णन से परे ॥ ३ ॥

मधुर मुस्कान, मधुर वाणी । चित्त रम जाता है सुनकर ॥  
त्रिकालज्ञ, पूर्ण ज्ञानी । वह माता है ॥ ४ ॥

जैसे देवी समय-समय पर । इस धरती पर अवतरित हुई ॥  
अनेक रूपों में प्रकट हुई । इस भू-तल पर ॥ ५ ॥

प्रथम चक्र "मूलाधार" । "आदिशक्ति" महान स्वरूप ॥  
सभी कार्य वहीं किए । जब देवी ने ॥ ६ ॥

चैतन्यमय श्रीगणेश । अग्रपूजा का मान जिनको ॥  
सदैव बालक गणाधीश । देवता हैं वे ॥ ७ ॥

द्वितीय चक्र "स्वाधिष्ठान" । "सरस्वती" सुंदर स्वरूप ॥  
वेद ब्रह्मदेव से प्राप्त कर । रचे गए ॥ ८ ॥

तृतीय चक्र "मणिपूर" । "लक्ष्मी" सुंदर स्वरूप ॥  
कार्य वे तीन चक्रों पर । "विष्णु" के साथ ॥ ९ ॥



"अनाहतचक्र" चतुर्थ । "दुर्गा" स्वरूप शोभे त्यात ॥  
सवे शोभे "कैलासनाथ" । ऐसी दुर्गा ती ॥ १० ॥

प्रथम स्वरूप मानवी । रामायण "सीता" शोभवी ॥  
"माता निर्मला" तैशी देवी । जणूं ती आहे ॥ ११ ॥

"विशुद्धिचक्र" ते पंचम । "राधिके" संगे शोभे शाम ॥  
करा माऊलीसी प्रणाम । नरनारी हो ॥ १२ ॥

"आज्ञाचक्र" तेंच सहावे । "महालक्ष्मीचे" स्थान दावे ॥  
रमली "मेरी" येशू सवे । मातृस्वरूपें ॥ १३ ॥

मानवी स्वरूप संपूर्ण । संबंध मायेशी म्हणून ॥  
लेकरा सौख्य देती पूर्ण । धन्य ती लीला ॥ १४ ॥

सातवे ते "सहस्रदल" । सात चक्रावरी खुशाल ॥  
जणू कार्य त्यांचे विशाल । पाहण्या लाभे ॥ १५ ॥

या चक्राचे होतां भेदन । आत्मसाक्षात्कार संपूर्ण ॥  
त्या नंतर करतां ध्यान । ब्रह्मदर्शन ॥ १६ ॥

कलियुगांत माया असे । म्हणूनी कोणां जाण नसे ॥  
कचित योगी कुणी दिसे । त्यास हे ठावे ॥ १७ ॥

पाहिले योगी साधू-संत । रमले कैक मानवात ॥  
ऐसेच दिसती बहुत । युग हे ऐसे ॥ १८ ॥

देहाची पर्वा नाही केली । पारणे खाऊनी मार्थीं ॥  
ऐसी एक नाथमाऊली । डोंगर भूके गेली ॥ १९ ॥

योगी गगनगिरीनाथ । राहती पर्वती गुहेत ॥  
नवनाथी साधू साक्षात । जाणती सारे ॥ २० ॥

निर्विचारता ध्यानांत आणा । चेतनतत्त्व तुम्हीं जाणा ॥  
ध्यानांत मन जन व्हाना । माऊली सांगे ॥ २१ ॥

"Anahat Chakra" is the fourth, where the radiant form of "Durga" shines.  
Alongside Her, "Kailasanath" is also resplendent—such is the glory of Durga. ||10||

The first form was human, as seen in the Ramayana with "Sita"'s grace.  
In the same way, "Mata Nirmala" is that Divine Mother, as if She Herself is here. ||11||

"Vishuddhi Chakra" is the fifth, where "Radha" shines alongside Shyam (Krishna).  
O men and women, bow down to the Divine Mother. ||12||

"Agnya Chakra" is the sixth, the rightful place of "Mahalakshmi".  
There, "Mary" dwelled with Jesus, embodying the motherly form. ||13||

Her human form was complete, symbolizing the bond of motherhood.  
She gave comfort and joy to Her children—  
blessed is that divine play (Leela). ||14||

The seventh is the "Sahasrara", reigning supreme over the seven chakras.  
Her work is vast and magnificent—one is fortunate to witness it. ||15||

When this chakra is pierced, self-realization is attained completely.  
Thereafter, when one meditates,  
one beholds the divine vision of the Brahman. ||16||

In Kaliyuga, illusion (Maya) prevails, so people fail to realize the truth.  
Rarely does a true Yogi appear, one who truly knows this. ||17||

Many saints and yogis have emerged and merged among humanity.  
Such divine souls are seen in abundance—this is the nature of the age. ||18||

They did not care for the body, they lived on mere water or air.  
Such was one Nath-Mauli (great yogi), who overcame hunger,  
living in the mountains. ||19||

Yogi Gagangiri Nath resides in the caves of the mountains.  
The great Navnath saints are ever-present, aware of all. ||20||

Attain the state of thoughtless awareness,  
know the essence of pure consciousness.  
Let your mind dissolve into meditation—  
this is what the Divine Mother teaches. ||21||

"अनाहत चक्र" चौथा । उसमें "दुर्गा" का स्वरूप शोभित होता है ॥  
साथ ही "कैलासनाथ" भी शोभायमान हैं—ऐसी हैं माँ दुर्गा ॥ १० ॥

प्रथम स्वरूप मानव का । रामायण में "सीता" की शोभा थी ॥  
"माता निर्मला" भी वैसी ही देवी हैं, मानो वही अवतरित हुई हों ॥ ११ ॥

"विशुद्धि चक्र" पंचम है । यहाँ "राधा" संग "श्याम" शोभते हैं ॥  
हे नर-नारी, माँ को प्रणाम करो ॥ १२ ॥

"आज्ञा चक्र" ही छठा है । यहाँ "महालक्ष्मी" का स्थान बताया गया है ॥  
वहीं "मेरी" (मरियम) येशू के साथ रम गई—मातृस्वरूप में ॥ १३ ॥

पूर्ण मानव स्वरूप में, वे माँ के रूप में संबोधित हुई ॥  
अपने बच्चों को सुख देने वाली—धन्य है वह लीला ॥ १४ ॥

सातवां है "सहस्रार" । यह सातों चक्रों का स्वामी है ॥  
इसका कार्य विशाल है—जिसका दर्शन करना सौभाग्य की बात है ॥ १५ ॥

जब इस चक्र का भेदन होता है, तब आत्मसाक्षात्कार पूर्ण होता है ॥  
इसके बाद जब ध्यान किया जाए, तो ब्रह्म का दर्शन होता है ॥ १६ ॥

कलियुग में माया व्याप्त है, इसलिए कोई इसे जान नहीं पाता ॥  
कभी-कभार कोई सच्चा योगी दिखता है, वही इसका ज्ञान रखता है ॥ १७ ॥

अनेक योगी, संत और साधु इस संसार में रम गए ॥  
इस युग में भी ऐसे दिव्य आत्माएँ दिखाई देती हैं ॥ १८ ॥

उन्होंने देह की चिंता नहीं की, केवल जल और वायु पर जीवनयापन किया ॥  
ऐसे ही एक नाथ-माऊली थे, जो पर्वतों में रहकर भूख से मुक्त हो गए ॥ १९ ॥

योगी गगनगिरीनाथ पर्वतों की गुफाओं में वास करते हैं ॥  
नवनाथ संप्रदाय के साधु प्रत्यक्ष रूप से उपस्थित हैं और सब कुछ जानते हैं ॥ २० ॥

निर्विचार ध्यान में स्थित हो जाओ, चेतना के तत्व को जानो ॥  
ध्यान में मन लीन हो जाए—यही माँ का उपदेश है ॥ २१ ॥

हृदयीं जीवात्मा तो वसे । दृश्य कधीं तो होत नसे ॥  
आज्ञाचक्रीं तो डुलतसे । तेज ते न्यारे ॥ २२ ॥

चंचल मन स्थिर करा । चित्त हृदयावर धरा ॥ २३ ॥

"जीव" एक "आत्मा" दूसरा । जाणवतील  
जोडणारी ती भगवत्ती । समर्थ तत्पर असे ती ॥  
हवी प्रतिज्ञा अटल ती । जाणूनी घ्यावें ॥ २४ ॥

संदेश गोड माताजींचा । नटला देह मानवाचा ॥  
विश्वास ठेवूनी मनाचा । मानवा जाग ॥ २५ ॥

पूज्य माताजी जगतात । प्रेम जणूं ते मूर्तीमंत ॥  
भेटले ज्यास जीवनात । धन्य तो जाणा ॥ २६ ॥

जिथें लक्ष्मी ती स्वयें असें । तिथे लक्ष्मीला  
सौख्य भोवती नांदतसे । माय तोटा नसे ।  
माय ते प्रेमी ॥ २७ ॥

वाण नाही कसली जरा । तरी भजे परमेश्वरा ॥  
अंश ईश्वरी असे खरा । या भूमिवरी ॥ २८ ॥

दैवीशक्तिचा फिरे हात । दुःख पळते सागरात ॥  
भक्त पिडित धावतात । आईच्या पाशी ॥ २९ ॥

कष्ट सोशिली माता स्वयें । परी भक्तां ते कळू नये ॥  
ऐसे प्रेमी हृदय दयें । भारीले त्यांचे ॥ ३० ॥

भेदभाव तो नाही तीर्थे । श्रीमंत आणि गरीब ते ॥  
प्रेम लुटतात सत्य ते । माऊली ठायीं ॥ ३१ ॥

जो जो असतो भाग्यवान । त्याचेच वळे तीर्थे ध्यान ॥  
राव रंक नि थोर सान । भेटती तेथे ॥ ३२ ॥

अपरंपार आत्मज्ञान । कोण संकटी सर्व जाण ॥  
दूर ना कधीं भगवान । माऊली सेवें ॥ ३३ ॥

The soul resides in the heart, yet it is never seen.  
At the Agnya Chakra, it wavers—its radiance is unique. ||22||

Still your restless mind, focus your attention on the heart. ||23||

The "Jiva" (individual self) and "Atma" (spirit) are distinct,  
but the Divine Mother is the one who unites them.  
She is ever-powerful and ever-ready.  
Her vow is firm—understand this well. ||24||

The sweet message of Mataji is embodied in the human form.  
Have faith in your heart, O mankind, and awaken! ||25||

The Revered Mataji walks this earth,  
She is love incarnate. Fortunate is the one who meets Her in life—  
know that he is truly blessed. ||26||

Where Lakshmi Herself resides, there prosperity flourishes all around.  
There is no lack of maternal love, for Mother is the very essence of love. ||27||

She does not need anything, yet She constantly worships the Supreme.  
A divine spark of God truly exists on this very earth. ||28||

The hand of divine power moves, driving away sorrow into the vast ocean.  
The suffering and the devoted rush to the Mother's feet. ||29||

The Mother endures hardships Herself,  
yet Her devotees never come to know of it.  
Such is the deep compassion of Her loving heart—  
Her burden remains unseen. ||30||

There is no discrimination in holy places, between the rich and the poor.  
All equally receive the nectar of truth at the Mother's abode. ||31||

The truly fortunate are those whose minds turn toward the sacred.  
Kings and paupers, great and small— all meet there as one. ||32||

The knowledge of the Spirit is infinite, and in times of distress, it knows all.  
The Divine is never far away for those who serve the Mother. ||33||

हृदय में जीवात्मा निवास करता है, फिर भी वह कभी दिखता नहीं।  
आज्ञा चक्र में वह लहराता है—उसका तेज अनोखा है। ॥22॥

चंचल मन को स्थिर करो, और चित्त को हृदय पर केंद्रित करो। ॥23॥

"जीव" एक है, "आत्मा" दूसरा है— उन्हें जोड़ने वाली शक्ति भगवती ही है।  
वह समर्थ है और सदैव तत्पर रहती है। उसकी प्रतिज्ञा अटल है—इसे जानकर समझो। ॥24॥

माताजी का मधुर संदेश मानव देह में सुशोभित है।  
मन में अटूट विश्वास रखो, हे मानव, और जागरूक बनो! ॥25॥

पूज्य माताजी इस धरती पर विचरण करती हैं, वे मानो प्रेम की मूर्ति हैं।  
जिसने जीवन में उन्हें पाया, वह धन्य समझा जाए। ॥26॥

जहाँ स्वयं महालक्ष्मी विराजमान होती हैं, वहाँ सुख-समृद्धि स्वाभाविक रूप से रहती है।  
माँ की ममता की कोई सीमा नहीं, क्योंकि माँ स्वयं प्रेम का स्वरूप हैं। ॥27॥

उन्हें किसी वस्तु की आवश्यकता नहीं, फिर भी वे सदा परमेश्वर का भजन करती हैं।  
इस पृथ्वी पर सच में ईश्वर का अंश विद्यमान है। ॥28॥

दैवी शक्ति का करुणामय हाथ चारों ओर घूमता है, और दुखों को सागर में बहा देता है।  
भक्त और पीड़ितजन दौड़कर माँ की शरण में चले आते हैं। ॥29॥

माँ स्वयं कष्ट सहन करती हैं, परंतु भक्तों को इसका आभास भी नहीं होने देतीं।  
ऐसा प्रेममय हृदय है उनका, कि उसका बोझ स्वयं उठा लेती हैं। ॥30॥

तीर्थों में कोई भेदभाव नहीं, न धनवान, न गरीब—  
सभी वहाँ सत्य और प्रेम का अनुभव करते हैं, माँ के चरणों में समर्पित होकर। ॥31॥

जिसका भाग्य उज्ज्वल होता है, वही तीर्थ की ओर ध्यान लगाता है।  
राजा, रंक, महान और साधारण— सभी वहाँ एकत्र होते हैं। ॥32॥

आत्मज्ञान असीमित है, और संकट में वह सब कुछ जानता है।  
भगवान कभी दूर नहीं होते उनके लिए जो माँ की सेवा में तत्पर रहते हैं। ॥33॥

मानवात रमली देवी । जाणिव मानवाला हवी ॥  
वैभवसंपन्न शोभवी । भक्तमेळा हा ॥ ३४ ॥  
लेकरे अज्ञानी ही सारी । लोळती पूज्य पायावरी ॥  
हस्त ठेवूनी डोईवरी । माय ती तारी ॥ ३५ ॥  
नाही ठावे जे मानवाला । माय देई ते ज्ञान त्याला ॥  
प्रेम हवे फक्त आईला । लेकरांचे त्या ॥ ३६ ॥  
गर्वाभिमान नाही ठावा । सर्वस्वि अर्पण ते देवा ॥  
थोर जाहली जनसेवा । धन्य ते कार्य ॥ ३७ ॥  
दैवीशक्तिचे ते गणित । "कुंडलिनी" होय जागृत ॥  
कैक भक्त स्वयें जाणित । नित्य त्या ठायीं ॥ ३८ ॥  
चरणस्पर्श ज्यानें केला । आधिव्याधित्या नष्ट झाल्या ।  
तो भक्तिमार्गात रमला । मानव जाणा ॥ ३९ ॥  
ध्यान धारणा सदा करा । वदनीं "माता" नाम स्मरा ॥  
मग जीवनात उद्धरा । गोड हा सल्ला ॥ ४० ॥  
दिव्यशक्ति "निर्मला देवी" । काव्य करील काय कवि ॥  
गुरुकृपा प्रथम हवी । लाभते तेव्हां ॥ ४१ ॥  
सगुणमूर्ती पाहूं चला । गूण आईचे गाऊं चला ॥  
ध्यान अंतरी लावू चला । छंद तो गोड ॥ ४२ ॥  
नरनारी रमले सारे । भक्तिचे सुटलेत वारे ॥  
अध्यात्मज्ञान रंगणारे । साधकां ठावे ॥ ४३ ॥  
ठाव मांडनी हृदयांत । बसते माता आनंदात ॥  
भाविक डोलतो सुखात । जीवनीं त्याच्या हृदया ॥ ४४ ॥  
माते ममता तुझी खरी । सजीव मूर्ती तूं ईश्वरी ॥  
भक्त तुझ्या चरणावरी । लोळतो आहे ॥ ४५ ॥

The Goddess dwells among humans,  
But humans must become aware of Her presence.  
She shines in all Her divine glory, As devotees gather around Her. ||34||

All these children are ignorant, Yet they roll at Her sacred feet.  
Placing Her hand upon their heads,  
The Divine Mother blesses and uplifts them. ||35||

What humans do not know, The Mother imparts as divine knowledge.  
She seeks nothing but love From Her beloved children. ||36||

Pride and arrogance have no place, For true devotion is surrendering everything to  
God. Service to humanity is the greatest virtue,  
Blessed is such noble work. ||37||

The workings of Divine Power— It is the awakening of Kundalini.  
Many devotees have experienced this As a daily reality. ||38||

Whoever touches Her feet Is freed from ailments and afflictions.  
Such a one becomes immersed in devotion,  
O mankind, understand this truth! ||39||

Always practice meditation and concentration,  
And let "Mata's" name be upon your lips. This is the sweet advice—  
Which shall uplift your life. ||40||

The Divine Power of Nirmala Devi— How can a poet ever describe it?  
But first, one must receive the grace of the Guru,  
Only then does true realization come. ||41||

Come, behold the embodiment of the Divine,  
Sing praises of the Mother's virtues. Fix your meditation deep within,  
For this melody is truly sweet. ||42||

Men and women are absorbed in Her devotion,  
The winds of Bhakti (devotion) now flow freely.  
The colors of spiritual wisdom fill the air,  
And true seekers understand this joy. ||43||

Within the heart, the Mother finds Her place, She dwells there in bliss.  
The true devotee sways in happiness, As his heart fills with divine love. ||44||

O Mother, your love is true, You are the living embodiment of the Divine.  
Your devotees surrender at Your feet, And remain there in complete devotion. ||45||



मनुष्यों के बीच रम गई देवी, पर मनुष्य को उसका ज्ञान होना चाहिए।  
वह दिव्य वैभव से सुशोभित होती हैं, जहाँ भक्तों की महफ़िल लगती है। ॥34॥

ये सभी बच्चे अज्ञानी हैं, फिर भी वे श्रद्धा से चरणों में लोटते हैं।  
माँ अपना हाथ सिर पर रखती हैं, और अपनी कृपा से उनका उद्धार करती हैं। ॥35॥

जो मनुष्य नहीं जानता, वह ज्ञान माँ उसे स्वयं देती हैं।  
माँ को केवल प्रेम चाहिए, अपने बच्चों का सच्चा प्रेम। ॥36॥

गर्व और अहंकार को त्याग दो, सब कुछ परमात्मा को अर्पण कर दो।  
सबसे महान सेवा है— मानवता की सेवा, धन्य है वह कार्य! ॥37॥

दैवीय शक्ति का यह रहस्य, कुंडलिनी के जागरण से प्रकट होता है।  
अनेक भक्त स्वयं इसका अनुभव करते हैं, और नित्य इसका साक्षात्कार करते हैं। ॥38॥

जिसने चरण स्पर्श किया, उसके सारे रोग और कष्ट मिट गए।  
वह भक्ति के मार्ग में लीन हो गया, हे मानव, इसे समझो! ॥39॥

सदैव ध्यान और धारणा करो, अपने मुख से "माँ" का नाम लो।  
तब तुम अपने जीवन का उत्थान करोगे, यह एक मीठी सलाह है। ॥40॥

दिव्य शक्ति निर्मला देवी— इसका वर्णन एक कवि कैसे कर सकता है?  
पहले गुरु की कृपा प्राप्त करनी होगी, तभी यह लाभ संभव है। ॥41॥

आओ, सगुण स्वरूप के दर्शन करें, और माँ के गुणों का गान करें।  
अपने हृदय में ध्यान स्थापित करें, क्योंकि यह भजन मधुर है। ॥42॥

सभी नर-नारी भक्ति में मग्न हैं, भक्ति की पवन अब बह रही है।  
आध्यात्मिक ज्ञान का रंग चढ़ रहा है, और साधकों को इसका भान है। ॥43॥

माँ हृदय में स्थान बना लेती हैं, और आनंद में निवास करती हैं।  
भक्त सुख में झूमता है, उसके हृदय में माँ का प्रेम बसा रहता है। ॥44॥

हे माँ, तुम्हारी ममता सच्ची है, तुम सजीव ईश्वरीय शक्ति हो।  
तुम्हारे भक्त तुम्हारे चरणों में समर्पित हैं, और पूर्ण श्रद्धा से झुके हुए हैं। ॥45॥

दूर देशी तूं जाशी जरी, प्रतिमा धरूनी सामोरी ॥  
जो जो स्मरी तुज अंतरीं, भेटशी त्याला ॥४६॥

ऐसे प्रेम ना दिले कोणी, प्रेमळ खरी तूं जननी ॥  
मस्तक ठेऊनी चरणीं, धन्यता वाटे ॥४७॥

लक्ष्मी म्हणूं की सरस्वती, कीं शंकराची त्या पार्वती ॥  
धन्य धन्य तूं भगवती, या कलियुगीं ॥४८॥

माताजी तुम्हीं दया करा, अखंड छत्र शिरी घरा ॥  
घ्यावे जवळी या पामरां, आस ही एक ॥४९॥

काय जादू तरी वाणीत, थोर दर्शन सुशोभित ॥  
स्पर्श होतसे तो पुनित, जाणवे न्यारे, ॥५०॥

सल्ला घ्यावा त्या गडावरी, तेथे नाथ "गगनगिरी" ॥  
सत्यवाणी मातेची खरी, साधकांसाठीं ॥५१॥

प्रभूभक्तिच्या प्रीतीवरी, नाथ भेटले गिरीवरी।  
"गहिनीनाथ" ते भूवरी, सांगती माता ॥५२॥

माताजीसारिखे दैवत। भक्त राहतसे शोधित  
परी, भेटते अकस्मित। भक्तिवेड्याला ॥५३॥

प्रपंची गुंतला मानव, नसते देवाची आठव ॥  
माता देतसे ती जाणीव, सावधान व्हा ॥५४॥

कनवाळू माता निर्मला, शिंपिते भक्तिचा तो मळा ॥  
सुगंध सकळीं फाकला, या जगावरी ॥५५॥

गरीब येती तिथे जरी, माय त्यासी जवळ करी ॥  
हस्त ठेऊनी तयां शिरीं, देतसे सारे ॥५६॥

दिसे प्रतिमा घरोघर, तेज आगळे खरोखर ॥  
भारताच्या या भूमिवर, आगळी मूर्ती ॥५७॥

Even if You travel to distant lands, Your image remains before us.  
Whoever remembers You in their heart, You meet them. (46)

No one has given such love, truly compassionate Mother.  
Placing our heads at Your feet, we feel divine bliss. (47)

Should I call You Lakshmi or Saraswati, or the Parvati of Lord Shiva?  
Blessed, blessed are You, O Divine Mother, even in this Kali Yuga. (48)

O Mother, please shower Your grace,  
let Your eternal shelter be upon our heads.  
Bring these helpless ones closer to You, for this is our only longing. (49)

What magic resides in Your words, what a divine and radiant vision!  
Your mere touch is sacred, it feels extraordinary. (50)

Seek guidance from that sacred mountain, where resides  
Nath "Gaganagiri."  
The truth in Mother's words is real, for all seekers. (51)

In the love of divine devotion, Nath was found upon the mountain.  
"Gahininath" on this earth, tells the tale of the Mother. (52)

There is no deity like Shri Mataji. Devotees search for Her,  
Yet, She appears suddenly before those madly in love with devotion. (53)

The worldly-minded man is entangled in illusion, forgetting the Divine.  
But the Mother grants him awareness—be alert! (54)

Compassionate Mother Nirmala spreads the garden of devotion.  
Its fragrance spreads everywhere in this world. (55)

Even the poor come to Her, and She embraces them with love.  
Placing Her hand upon their heads, She grants them everything. (56)

Her divine image appears in every home,  
With an extraordinary radiance, truly unique.  
On this sacred land of Bharat, She manifests as a divine form. (57)

भले ही तुम दूर देश चली जाओ, फिर भी तुम्हारी प्रतिमा हमारे सामने रहती है।  
जो भी तुम्हें मन से स्मरण करता है, तुम उसे मिलती हो। (४६)

ऐसा प्रेम किसी ने नहीं दिया, सच्ची प्रेममयी माँ हो तुम।  
सिर झुकाकर चरणों में, परम आनंद की अनुभूति होती है। (४७)

तुम्हें लक्ष्मी कहूँ या सरस्वती, या फिर शिव की पार्वती?  
कलियुग में भी, तुम धन्य-धन्य हो, हे भगवती! (४८)

माताजी, कृपा करो, अपनी छत्रछाया हमें सदा मिले।  
इन असहायों को अपने पास बुला लो, यही एक प्रार्थना है। (४९)

कैसी जादूभरी है तुम्हारी वाणी, कितना दिव्य और सुंदर दर्शन!  
तुम्हारा स्पर्श पवित्र कर देता है, और कुछ अलग ही अनुभव होता है। (५०)

उस पर्वत पर जाकर मार्गदर्शन लो, जहां नाथ "गगनगिरी" विराजते हैं।  
माँ की वाणी सत्य है, यह सभी साधकों के लिए है। (५१)

प्रभु-भक्ति के प्रेम में, नाथ पर्वत पर मिले।  
"गहिनीनाथ" इस धरती पर, माँ के बारे में बताते हैं। (५२)

श्री माताजी जैसी कोई देवी नहीं, भक्त उन्हें खोजते रहते हैं।  
लेकिन वे अचानक ही भक्ति में मग्न भक्तों को मिल जाती हैं। (५३)

माया में फंसा हुआ मानव, भगवान को याद नहीं करता।  
परंतु माता उसे वह चेतना देती है— सावधान हो जाओ! (५४)

दयालु माता निर्मला, भक्ति का यह बाग लगाती हैं।  
जिसकी सुगंध पूरे संसार में फैल जाती है। (५५)

चाहे गरीब भी वहाँ आ जाए, माँ उसे गले लगा लेती हैं।  
हाथ सिर पर रखकर, सब कुछ प्रदान कर देती हैं। (५६)

हर घर में उनकी प्रतिमा दिखाई देती है, उनका तेज अनुपम और अद्भुत है।  
भारत की इस पावन भूमि पर, वे एक दिव्य मूर्ति के रूप में प्रकट होती हैं। (५७)

चहूंकडे गाजते कीर्ति । साधकाला मिलते सुफूर्ति ॥  
भाविक करिती आरती । देवीची ऐशा ॥ ५८ ॥  
काय असते कोणा मनीं । जाणते सर्व ती जननी ॥  
तैशीच असे ती करणी । निर्मलाजींची ॥ ५९ ॥  
बोध हिताचा घ्यानीं धरा । कर्म जीवनीं शुभ करा ॥  
पाहा स्वयें परमेश्वरा । साधना ऐशी ॥ ६० ॥  
आहे कलिचे यूग परी । अनेक संत या भूवरी ॥  
फसतो मानव चौफेरी । पाहुनी वेष ॥ ६१ ॥  
लाभली ज्यास एक सिद्धि । तो म्हणे श्रेष्ठ माझी बुद्धि ॥  
मानवां नसते हो शुद्धि । धावतो तेथे ॥ ६२ ॥  
सिद्धि दावते चमत्कार । मानव करी नमस्कार ॥  
ऐसे साधू या जर्गीं फार । शेवटी शून्य ॥ ६३ ॥  
कुणर्णी साधू असे आगळा । बस्नाहुनी भक्त वेगळा ॥  
नाचे दरबार सगळा । भक्ति ही कैशी ॥ ६४ ॥  
भान नसे भक्तां वस्त्राचे । लक्ष तेथे कोटी जनांचे ॥  
दृश्य बघवे ना हे त्यांचे । वेगळे खेळ ॥ ६५ ॥  
कुणी निर्मितो अलंकार । आवडे भक्तां हा प्रकार ॥  
होईल तेथेची उद्धार । मानवा वाटे ॥ ६६ ॥  
शिखरीच्या गडस्वामींना । विनंती करिती नाथाना ॥  
मानवांसाठीं खाली याना । डोंगरातुनी ॥ ६७ ॥  
"आई निर्मला" फार भोळी । स्वर्गीची देवताच आली ॥  
मानवात मन जहाली । बोलकी देवी ॥ ६८ ॥  
दया क्षमा शांती नांदते । लेकरात माता खेळते ॥  
स्पष्टवादी बोल बोलते । धन्य ती वाणी ॥ ६९ ॥

Her glory resonates in all directions, bringing divine energy to seekers.  
Devotees perform Aarti in her honor. (58)

What lies in anyone's heart, she knows it all—  
For she is the Mother, and her actions are as pure as Shri Nirmala's. (59)

Embrace the wisdom of righteousness, Perform auspicious deeds in life.  
See for yourself—God is watching your Sadhana. (60)

Though this is the age of Kali, many saints walk this earth.  
Yet, man is deceived from all sides by outward appearances. (61)

One who attains a single Siddhi (spiritual power)  
Begins to boast of their own intelligence.  
But man lacks purity and runs after such displays. (62)

Siddhis perform miracles, And people bow before them.  
There are many such so-called saints in this world,  
But in the end, all leads to nothingness. (63)

Some fake saints stand apart,  
Dancing in courts while pretending to be different from true devotees.  
What kind of Bhakti is this? (64)

True devotees care not for their attire,  
Yet, millions are drawn towards these external displays.  
One cannot even bear to witness such spectacles—  
It is a different game altogether. (65)

Some create grand ornaments, And such things appeal to their followers.  
They believe liberation will come from there— Such is man's ignorance. (66)

Seekers plead to the Lord of the Mountain Peaks, Requesting the divine to descend.  
They ask the Nath sages to come down from the mountains,  
For the sake of mankind. (67)

"Mother Nirmala" is truly innocent, A heavenly deity who has descended to Earth.  
She has merged her consciousness with humanity,  
A goddess who speaks. (68)

Compassion, forgiveness, and peace dwell within her.  
She plays among her children like a loving mother.  
Her words are straightforward and clear—  
Blessed is her divine speech! (69)

चारों दिशाओं में गूँज रही है महिमा, साधक को मिलता है दिव्य आनंद।  
भक्त श्रद्धा से आरती करते हैं, ऐसी हैं देवी महान! (58)

मन में क्या छिपा है, यह जानती हैं जननी,  
वैसे ही उनके कार्य हैं, जैसे निर्मलाजी के। (59)

हितकारी ज्ञान को अपने मन में धारण करो, जीवन में शुभ कर्म करो।  
स्वयं परमेश्वर देख रहे हैं, ऐसी हो साधना! (60)

यह कलियुग का समय है, लेकिन इस भूमि पर कई संत भी आए हैं।  
फिर भी, मनुष्य चारों ओर से छलावा खाता है, केवल बाहरी रूप देखकर। (61)

जिसे एक सिद्धि प्राप्त हो जाती है, वह अपनी बुद्धि को सर्वश्रेष्ठ मानने लगता है।  
लेकिन मनुष्य में पवित्रता नहीं होती, फिर भी वह उनके पीछे भागता है। (62)

सिद्धियाँ चमत्कार दिखाती हैं, और मनुष्य श्रद्धा से उनके आगे नतमस्तक हो जाता है।  
ऐसे दिखावटी साधु इस संसार में बहुत हैं, लेकिन अंत में सब कुछ शून्य हो जाता है। (63)

कुछ नकली साधु अलग तरह के होते हैं, वे सच्चे भक्तों से बिल्कुल भिन्न होते हैं।  
उनका पूरा दरबार नाचता रहता है, क्या यही भक्ति है? (64)

सच्चे भक्तों को अपने वस्त्रों की परवाह नहीं होती,  
लेकिन करोड़ों लोग केवल बाहरी दिखावे की ओर आकर्षित होते हैं।  
उनका यह खेल देखकर मन विचलित हो जाता है, यह एक अलग ही तमाशा है! (65)

कोई आभूषण बनाता है, भक्तों को यह आकर्षित करता है।  
उन्हें लगता है कि वहीं उद्धार होगा, ऐसा ही मनुष्य सोचता है! (66)

पहाड़ों के शिखर पर रहने वाले संतों से भक्त प्रार्थना करते हैं—  
"मनुष्यों के लिए नीचे आइए, इन पर्वतों से!" (67)

"माँ निर्मला" अत्यंत सरल हृदय वाली हैं, जैसे स्वर्ग से देवी स्वयं पृथ्वी पर आई हों।  
उन्होंने मानव हृदय में वास कर लिया है, एक सजीव और साक्षात् देवी! (68)

करुणा, क्षमा और शांति उनमें बसती हैं, जैसे माँ अपने बच्चों के संग खेलती है।  
वे स्पष्ट रूप से सत्य वचन कहती हैं— धन्य हैं उनकी दिव्य वाणी! (69)

वाटे घडावी नित्य सेवा। आनंद दर्शनाचा ध्यावा ॥  
लोभ दुसरा तो नसावा । चिंतनीं धुंद ॥ ७० ॥

बदती माता भक्तजनां । साक्षात्कार नंतर जाणा ॥  
सहज योगिपद ध्याना । श्रेष्ठ ते आहे ॥ ७१ ॥

योगिच संकटां निवारी । तो चेतनतत्त्वाधिकारी ॥  
ते मिळे पायरी पायरी । जाणवे आधीं ॥ ७२ ॥

चित्त फिरविता ते येते । मग सूत्रही ते गाठते ॥  
पुढे पुढें सर्व कळते । योगि ते जाणे ॥ ७३ ॥

अस्मिता पलिकडे आहे । तो धर्मही जागृत राहे ॥  
समष्टी दृष्टीनें त्या पाहे । लाभते सारे ॥७४ ॥

आत्मतत्व मग धर्मात । चमकणार अकस्मात ॥  
मिटे अस्मिता तुमच्यांत । धर्मची तुम्हीं ॥ ७५ ॥

मग आनंद नाही तिथे । शरीर आहे जाणवते ॥  
धर्मकार्य मात्र मग ते । करणे भाग ॥ ७६ ॥

संसारी प्रकाश तो येई । मात अंधारावर होई ॥  
बेंच तत्त्व लक्षांत ठेवी । आई ती सांगे ॥ ७७ ॥

चंद्रसूर्य ईडा पिंगला । रोमरोमीं देह नटला ॥  
गणेश भैरव तुम्हांला । रक्षिण्या आहे ॥ ७८ ॥

हृदय प्रभूचे मंदीर । चित्त करा तेथेची स्थीर ॥  
आम्हीं तुमच्या बरोबर । वाणी आईची ॥ ७९ ॥

तुमची इच्छा मिळे केव्हां । आमुच्या ती इच्छेत जेव्हां ॥  
कार्य साध्य होतसे तेव्हां । देवता सांगे ॥ ८० ॥

धर्मस्तंभ व्हा आधीं परी । धर्मस्थापना ती नंतरी ॥  
भगवती माता उद्धरी । भाविकां साऱ्यां ॥ ८१ ॥



May the opportunity arise to serve always.  
May the joy of divine vision be experienced.  
Let there be no other greed, Let the mind be absorbed in meditation. ||70||

The Divine Mother blesses the devotees,  
Realization comes after the experience.  
The state of a Sahaja Yogi in meditation Is truly the highest. ||71||

She removes the troubles of Yogis,  
She is the controller of the conscious principle.  
This is attained step by step, One realizes it gradually. ||72||

As the mind turns inward, It begins to grasp the essence.  
Slowly, everything becomes clear, Only a Yogi understands this. ||73||

Beyond ego, Dharma (righteousness) remains awakened.  
With a collective vision, One attains everything. ||74||

The essence of the Self shines in Dharma, Suddenly, it illuminates.  
Ego dissolves within you, You become the embodiment of Dharma. ||75||

There is no joy in mere existence, Only the body is perceived.  
The real duty then becomes The work of Dharma. ||76||

The light of spirituality spreads, Dispelling the darkness within.  
The essence of knowledge is retained, The Mother reveals this truth. ||77||

The Moon, the Sun, Ida, and Pingala, They are adorned within the body.  
Lord Ganesha and Bhairava Are there to protect you. ||78||

The heart is the temple of the Lord, Keep your mind steady within it.  
We are always with you, This is the word of the Divine Mother. ||79||

Your wish is fulfilled when It aligns with our divine will.  
When the work is accomplished, The deities affirm it. ||80||

Be a pillar of Dharma first, Then comes the establishment of righteousness.  
The Divine Mother uplifts, All the true devotees. ||81||

नित्य सेवा करने का अवसर मिले, आनंदमय दर्शन की अनुभूति हो।  
कोई और लालच न हो, मन ध्यान में तल्लीन रहे ॥७०॥

मां भक्तों का कल्याण करती हैं, साक्षात्कार के बाद इसे समझो।  
सहज योगियों की ध्यान अवस्था, सर्वोत्तम होती है ॥७१॥

योगियों के संकट हरने वाली, वह चेतना तत्व की अधिष्ठात्री हैं।  
यह अवस्था क्रमशः प्राप्त होती है, पहले इसे समझो ॥७२॥

जैसे-जैसे चित्त स्थिर होता है, वैसे-वैसे सूत्र तक पहुँचा जाता है।  
धीरे-धीरे सब स्पष्ट हो जाता है, केवल योगी ही इसे जानता है ॥७३॥

अहंकार से परे जो जाता है, वह धर्म को जाग्रत रखता है।  
समष्टि की दृष्टि से जो देखता है, वह सब कुछ प्राप्त कर लेता है ॥७४॥

आत्मतत्व फिर धर्म में चमकता है, और अचानक प्रकट होता है।  
अहंकार मिट जाता है तुममें, और तुम स्वयं धर्मस्वरूप बन जाते हो ॥७५॥

फिर वहाँ सांसारिक आनंद नहीं रहता, बस शरीर का ही अनुभव होता है।  
तब केवल धर्म का कार्य बचता है, जो करना आवश्यक होता है ॥७६॥

संसार में जब प्रकाश आता है, तब माता अंधकार को हरती हैं।  
गूढ़ तत्व को हृदय में स्थान दो, माँ यही समझाती हैं ॥७७॥

चंद्र, सूर्य, इड़ा और पिंगला, शरीर के रोम-रोम में समाए हैं।  
गणेश और भैरव तुम्हारी रक्षा के लिए, सदैव उपस्थित हैं ॥७८॥

हृदय प्रभु का मंदिर है, चित्त वहीं स्थिर रखो।  
हम सदा तुम्हारे साथ हैं, यह माँ की वाणी है ॥७९॥

तुम्हारी इच्छा तभी पूर्ण होगी, जब वह हमारी इच्छा के अनुरूप होगी।  
जब कार्य सिद्ध होता है, तो देवता भी इसकी पुष्टि करते हैं ॥८०॥

पहले धर्म का स्तंभ बनो, फिर धर्म की स्थापना होगी।  
भगवती माता उद्धार करेंगी, सभी भाविक भक्तों का ॥८१॥

प्रभुसेवा सदा करावी । सत्यदृष्टि सदा धरावी ॥  
असत्यवाणी नां वदावी । देव ना दूरी ॥ ८२ ॥  
कर्म ज्याचे असते जैसे । फळही त्याला मिळे तैसे ॥  
अभक्तासी कळेल कैसे । न्याय हा दैवी ॥ ८३ ॥  
आत्मजानों व्हावे समर्थ । मोक्षमार्ग तो सुषुम्नेत ॥  
ध्यानीं ठेवावी मध्यवाट । बोध मातेचा ॥ ८४ ॥  
मातेस भक्ता जा शरण । सोडूं नको दोन्हीं चरण ॥  
जाणे माता जन्म मरण । भाग्य आपुले ॥ ८५ ॥  
कोणी नाही जगीं कोणाचे । प्रेम लुटा हो माऊलीचें ॥  
स्थान तेची आत्मशांतीचे । ओळखा बारे ॥ ८६ ॥  
लक्ष चौऱ्यांशी थोनीतुनी । नरदेह लाभला ज्ञानी ॥  
सार्थक करावे त्यातूनी । बोध हा थोर ॥ ८७ ॥  
समुद्रतीरी भगवती । परमार्थाचे देई मोती ॥  
घेऊनी भक्त पार होती । भाग्य हे थोर ॥ ८८ ॥  
ज्यांची असे थोर पुण्याई । त्यांस लाभते ऐसी आई ॥  
संकटीं धावे लवलाही । प्रेम ते गोड ॥ ८९ ॥  
दैवी सामर्थ्य ते अचाट । भूत पिशाच्च काढी वाट ॥  
रामबाण फिरतो हात । माय मायाळू ॥ ९० ॥  
लपवू नका कधीं काय । जाणते सर्वकांहीं माय ॥  
धरा आधीं तिचेच पाय । ध्यानीं ठेवावे ॥ ९१ ॥  
ध्यानीं मनीं राहो माताजी । सुखात दुःखात माताजी ॥  
रात्रंदिन पाहा माताजी । बेड हे तारी ॥ ९२ ॥  
" निर्मला माताजी" आपुल्या लेकरांना साऱ्या भेटल्या ॥  
नित्य हृदयीं त्या बैसल्या । भक्तिनें पाहा ॥ ९३ ॥

Always serve the Lord, Always hold the vision of truth.  
Never speak falsehood, For God is never far away. ||82||

As are one's actions, So shall be one's rewards.  
How can a non-believer understand This divine justice? ||83||

O seekers, become strong, For the path to liberation lies in Sushumna.  
Keep your focus on the middle path, This is the wisdom of the Mother. ||84||

O devotee, surrender to the Mother, Never leave Her holy feet.  
The Mother alone knows Your fate of birth and death. ||85||

No one truly belongs to anyone in this world,  
Only the Divine Mother's love is eternal.  
Her presence is the abode of inner peace, Recognize this truth. ||86||

After wandering through 84 million births,  
You have received this human life, O wise one.  
Make it meaningful, For this is the greatest teaching. ||87||

At the ocean's shore, The Divine Mother offers pearls of spiritual truth.  
Holding them, devotees cross over, Such is their great fortune. ||88||

Those with immense merits, Are blessed to have such a Mother.  
She rushes to them in distress, Her love is sweet and divine. ||89||

Her divine power is unparalleled, It clears the path of spirits and obstacles.  
Her hands wield the ultimate divine weapon,  
Yet She is the ever-loving Mother. ||90||

Never try to hide anything, For the Mother knows all.  
First, surrender at Her feet, And keep Her in your heart. ||91||

Let Mother always reside in your mind, In joy and in sorrow, think of Her.  
Day and night, behold the Mother, She alone will ferry you across. ||92||

"Nirmala Mataji" has embraced all Her children,  
She forever dwells in the hearts of Her devotees.  
Behold Her with pure devotion. ||93||

प्रभु की सेवा सदा करो, सत्य की दृष्टि सदा बनाए रखो।  
असत्य वाणी कभी न बोलो, क्योंकि भगवान कभी दूर नहीं होते॥ ८२ ॥

जैसा कर्म करेगा इंसान, वैसा ही फल मिलेगा उसे।  
अभक्त को कैसे समझेगा, यह दिव्य न्याय? ॥ ८३ ॥

हे आत्मज्ञानी, तुम सक्षम बनो, मोक्ष का मार्ग सुषुम्ना में है।  
ध्यान में मध्य मार्ग को धरो, यही माता की शिक्षा है॥ ८४ ॥

हे भक्त, माता की शरण में जाओ, उनके पावन चरण कभी मत छोड़ो।  
माता ही जानती हैं तुम्हारे जन्म और मृत्यु का भाग्य॥ ८५ ॥

इस दुनिया में कोई किसी का नहीं, सिर्फ माँ का प्रेम ही सच्चा है।  
शांति का वास्तविक स्थान वही है, इसे पहचानो॥ ८६ ॥

चौरासी लाख योनियों के बाद, तुम्हें यह मानव जीवन मिला है, ओ ज्ञानी।  
इसे सार्थक बनाओ, यही सबसे महान सीख है॥ ८७ ॥

समुद्र के किनारे भगवती, परमार्थ के मोती देती हैं।  
उन्हें थामकर भक्त पार होते हैं, यह महान सौभाग्य है॥ ८८ ॥

जिन्होंने महान पुण्य किए हैं, उन्हें ऐसी माँ का आशीर्वाद मिलता है।  
संकट में वह तुरंत दौड़कर आती हैं, उनका प्रेम मीठा और अनमोल है॥ ८९ ॥

उनकी दिव्य शक्ति अद्भुत है, भूत-पिशाच भी मार्ग छोड़ देते हैं।  
रामबाण उनके हाथ में है, लेकिन माँ प्रेममयी हैं॥ ९० ॥

कुछ भी कभी मत छिपाओ, क्योंकि माँ सब कुछ जानती हैं।  
पहले उनके चरणों में समर्पित हो जाओ, और ध्यान में उन्हें धरो॥ ९१ ॥

माँ हमेशा मन में रहें, सुख-दुःख में माँ का स्मरण करो।  
रात-दिन माँ को देखो, वही इस भवसागर से पार कराएंगी॥ ९२ ॥

"निर्मला माताजी" अपने सभी बच्चों से मिली हैं,  
वह सदा हृदय में विराजमान हैं।  
भक्ति भाव से उन्हें देखो॥ ९३ ॥

जैसा चंद्रमा पुनवेचा । तैसा टिळा शोभे भालिचा ॥  
पदर शोभतो आईच्या । डोईला छान ॥ ९४ ॥

दर्शन मिळते मंगल । चौफेर असते मंगल ॥  
सारेच घडते मंगल । स्वर्गची भासे ॥ ९५ ॥

चुकां आम्हां क्षमा करी । अज्ञानी जन आम्हीं परी ॥  
रमो मन ध्यानमंदीरीं । कर कृपा आई ॥ ९६ ॥

आस ईश्वरां माझी कळो । आयुष्य माझें मातें मिळो ॥  
माते ठायीं पाऊल वळो । बालकाचे या ॥ ९७ ॥

पावन भूमी ही भारती । अंश दैवी अवतरती ॥  
पारखणारे या जगती । फार हो थोडे ॥ ९८ ॥

कुणीं संत ते राजयोगी । कुणी असती हठयोगी ॥  
सत्य निस्वार्थी खरे त्यागी । कचित होती ॥ ९९ ॥

थोर माता सौभाग्यवती । चंदनापरी त्या झीजती ॥  
झटती माता परमार्थी । धन्य ते कार्य ॥ १०० ॥

दिली प्रतिमा माताजींची । कृपा त्या गगनगिरींची ॥  
झाली मांडणी अक्षरांची । पुज्य ती सारी ॥ १०१ ॥

माहात्म्य सान हे गाईले । माताजीनीं पूर्ण श्रविले ॥  
तेथेची पावन जहाले । कविचे शब्द ॥ १०२ ॥

पठण करा ऐका परी । कराल याची निंदा जरी ॥  
दैवी लीला फार ती न्यारी । दंड भोगाया ॥ १०३ ॥

वाईट दृष्टि जो धरील । घोर पातक तो करील ॥  
पाप जन्मीं या तो भोगिल । ध्यानी हे राहो ॥ १०४ ॥

माताजीचे कार्य केवढे । चरित्र पर्वता एवढे ॥  
सान कार्य ठेवूनी पुढें । लेखणी थांबे ॥ १०५ ॥

Just as the full moon shines bright, So does the tilak glow on the forehead.  
The mother's veil is resplendent, Adorning her head beautifully. || 94 ||

Her divine vision is auspicious, Everything around is filled with blessings.  
All events unfold in harmony, It feels like heaven itself. || 95 ||

Forgive us for our mistakes, We are but ignorant souls.  
Let our minds find peace in meditation,  
O Mother, shower your grace upon us. || 96 ||

May my longing for God be understood, May my life be dedicated to my Mother.  
May my steps always turn toward Her, Like a child seeking its mother. || 97 ||

This sacred land of Bharat, Is where divine incarnations descend.  
Yet, in this world, Only a few can truly recognize them. || 98 ||

Some are saints, some are royal yogis, Some follow the path of Hatha Yoga.  
But true seekers of truth and selflessness, Are indeed very rare. || 99 ||

The great Mother, full of fortune,  
She gives herself away like sandalwood, wearing down for others.  
She tirelessly works for the spiritual upliftment of all,  
Blessed is her divine mission. || 100 ||

The sacred image of Mataji was given,  
By the grace of Gagangiri Maharaj.  
The letters were arranged to form this tribute,  
Each word is worthy of reverence. || 101 ||

The greatness of the Mother has been sung, And she has heard it in its entirety.  
Thus, the poet's words themselves, Have become sanctified. || 102 ||

Read and listen to these words, But if you criticize them,  
Know that this divine play is beyond ordinary understanding,  
And punishment awaits the ungrateful. || 103 ||

Those who look upon her with ill intent, Will commit a grave sin.  
They will suffer for their misdeeds,  
Let this be remembered always. || 104 ||

The work of Mataji is beyond measure,  
Her divine character is as vast as a mountain.  
Placing this humble effort before her,  
The pen now comes to rest. || 105 ||

जैसे पूर्णिमा का चंद्रमा चमकता है, वैसे ही माथे पर तिलक शोभा बढ़ाता है।  
मां का आंचल भी सुंदर लगता है, सिर पर सुशोभित होता है। ॥ ९४ ॥

मां के दर्शन से मंगल होता है, हर ओर शुभता का संचार होता है।  
सब कुछ मंगलमय लगता है, जैसे स्वयं स्वर्ग उतर आया हो। ॥ ९५ ॥

हमारी भूलों को क्षमा करो, हम अज्ञान से भरे हुए हैं।  
मन को ध्यान के मंदिर में रमने दो, हे मां, कृपा बरसाओ! ॥ ९६ ॥

मेरी यह ईश्वर के प्रति प्रार्थना है, कि मेरा जीवन केवल मां को समर्पित हो।  
मेरा हर कदम मां की ओर मुड़ जाए, मैं उनके बालक समान बन जाऊं। ॥ ९७ ॥

यह भारतभूमि पावन है, जहां ईश्वरीय अवतार जन्म लेते हैं।  
परंतु इस संसार में, उन्हें पहचानने वाले बहुत ही कम होते हैं। ॥ ९८ ॥

कुछ संत होते हैं जो राजयोग के मार्ग पर चलते हैं, कुछ हठयोग के अनुयायी होते हैं।  
परंतु सत्य, निस्वार्थता और त्याग की राह पर, बहुत ही कम लोग चलते हैं। ॥ ९९ ॥

महान माता सौभाग्यशाली होती हैं, जो चंदन की तरह स्वयं को गलाती हैं।  
वह परमार्थ के कार्यों में सदा लगी रहती हैं, धन्य है उनका यह कार्य। ॥ १०० ॥

माताजी की प्रतिमा प्रदान की गई, गगनगिरी महाराज की कृपा से।  
शब्दों को सुंदर रूप में सजाया गया, और वे सभी पूजनीय बन गए। ॥ १०१ ॥

इस छोटे से महात्म्य का गायन हुआ, और माताजी ने इसे पूर्ण रूप से सुना।  
इससे ही कवि के शब्द भी पावन हो गए, और उनका महत्व बढ़ गया। ॥ १०२ ॥

पढ़ो और सुनो, पर यदि तुम इसकी निंदा करोगे,  
तो जान लो कि यह दिव्य लीला अनोखी है,  
और इसके अपमान का दंड भुगतना पड़ेगा। ॥ १०३ ॥

जो कोई इस पर बुरी दृष्टि डालेगा, वह भयंकर पाप करेगा।  
उसे अपने अगले जन्म में, इन पापों का दंड भोगना पड़ेगा। ॥ १०४ ॥

माताजी का कार्य कितना महान है! उनका चरित्र पर्वत के समान विशाल है।  
अब इस छोटे से प्रयास को यहीं रोकते हैं, और लेखनी विश्राम लेती है। ॥ १०५ ॥



मी कलाकार डोंगरीचा । थोर आदेश तो गुरूंचा ॥  
योगही आलासे भेटीचा । भेटली माता ॥ १०६ ॥

पुज्य आईचे ध्यान करूं । प्रेमानें ते चरण धरूं ॥  
मानव जन्मीं या उद्धरूं । योग हा आहे ॥ १०७ ॥

वाहे गंगा ती झरझर । चला जाऊं या तीरावर ॥  
सांगे सकलां "मधूकर" । पामर एक ॥ १०८ ॥

॥ इति "दासमधुकृत" प० पू० भगवती "निर्मलादेवी "  
माहात्म्य समाप्त ॥

॥ प० पू० भगवती निर्मलामाताजी चरणार्पणमस्तु ॥

॥ ॐ शांतिः शांतिः शांतिः ॐ ॥

I am an artist from Dongri,  
And the great command comes from my Guru.  
Through yoga, this divine meeting happened,  
And I met the Mother. || 106 ||

Let us meditate upon the revered Mother,  
And hold Her feet with love.  
Let us uplift ourselves in this human birth,  
For this is the true path of Yoga. || 107 ||

The Ganga flows swiftly,  
Let us go to its sacred shores.  
Says "Madhukar" to all,  
That he is but a humble being. || 108 ||

Thus, the sacred scripture "Dasamadhukrit"  
on the glory of the revered Goddess  
"Nirmala Devi" concludes.

May this be humbly offered at the holy feet  
of the revered  
Goddess Nirmala Mataji.

**|| Om Shantiḥ Shantiḥ Shantiḥ Om ||**

मैं कलाकार डोंगरी का,  
गुरु का यह महान आदेश।  
योग भी इस भेंट में आया,  
मुझे माता मिल गई॥ १०६ ॥

पूज्य माता का ध्यान करें,  
प्रेम से उनके चरण पकड़ें।  
इस मानव जन्म का उद्धार करें,  
यही सच्चा योग है॥ १०७ ॥

गंगा बहती है झरझर,  
चलो चलें उसके तट पर।  
सभी को कहता है "मधुकर",  
कि मैं तो हूँ एक साधारण प्राणी॥ १०८ ॥

॥ इस प्रकार "दासमधुकृत"  
प० पू० भगवती "निर्मला देवी" का माहात्म्य समाप्त॥

॥ प० पू० भगवती निर्मला माताजी चरणार्पणमस्तु ॥

॥ ॐ शांतिः शांतिः शांतिः ॐ ॥

# आरती

(चाल-साधी)

जय देवी जय देवी जय निर्मल गंगे ।  
ओवाळितो आरती तुजला जय दुर्गे ॥ धृ० ॥

ठाऊक नव्हती ज्यांना ती ईश्वर-भात ।  
दर्शन देशी त्यांनां तूं दैवी शक्ति ॥  
येऊन मानव जन्मां जी दुर्लभ शांति ।  
ती सद्भक्तां लाभे पूजतां तंव मूर्ती ॥ जय० ॥ १ ॥

जय जगदंबे माते तूझी धन्य लिला ।  
प्रसन्न दर्शन लाभे भाळावर टिळा ॥  
मधुरवाणी तूझी कळेल ती ज्याला ।  
कधींच मानवजन्मीं दुःख नसे त्याला ॥ जय० ॥ २ ॥

लपून बसली आहे शरिरीं कुंडलिनी ।  
क्षणात करशी जागृत स्पर्शानें जननी ॥  
कलियुगीं ही माते अजब तूझी करणी ।  
तूझे आगमन देवी पावन ही धरणी ॥ जय० ॥ ३ ॥

मानव-कल्याणासी तंव जीवन सगळे ।  
शरिर तुझे जैसे चंदन ते झिजले ॥  
कधीं न सुटणारे ते चरण तुझे धरले ।  
दास "मधुकर" सांगे मजला उद्धरीले ॥ जय० ॥ ४ ॥

॥ ॐ नमो भगवती माताजी निर्मलादेवी ॐ ॥

# Aarti

(Tune – Simple)

Victory to the Goddess, Victory to the Goddess,  
Victory to Nirmal Ganga!  
We offer this Aarti to You, Victory to Durga! [Chorus]

Those who were unaware of the Divine Essence,  
You revealed to them Your Divine Power.  
Through this human birth, which is rare,  
True devotees attain peace by worshipping Your idol.  
Victory To Thee Always! [1]

Victory to Jagadamba Mata, Your divine play is wondrous!  
With Your auspicious darshan, a tilak graces our foreheads.  
Only those who understand Your sweet words,  
Never experience sorrow in their human life.  
Victory To Thee Always! [2]

Kundalini lies hidden within the body,  
Yet, with a single touch, O Mother, You awaken it instantly!  
In this Kaliyuga, O Mother, Your miracles are extraordinary,  
Your divine arrival has sanctified this Earth.  
Victory To Thee Always! [3]

Your entire life is dedicated to the welfare of humanity,  
Your body, like sandalwood, has worn itself out for others.  
Holding firmly to Your feet, we shall never let go,  
Your devotee "Madhukar" proclaims –  
You have granted me salvation!  
Victory To Thee Always!! [4]

**|| Om Namo Bhagavati Mataji Nirmala Devi Om ||**

# आरती

(चाल – सरल)

जय देवी, जय देवी, जय निर्मल गंगे।  
हम आरती उतारते हैं, जय दुर्गे! [ध्रुपद]  
जो ईश्वर-तत्व को नहीं जानते थे,  
तूने उन्हें अपना दिव्य स्वरूप दिखाया।  
जो इस दुर्लभ मानव जन्म में आते हैं,  
वे सच्चे भक्त बनकर तेरी मूर्ति की पूजा से शांति पाते हैं।  
तेरी सदा ही जय हो! [1]

जय जगदंबा माता, तेरी लीला धन्य है।  
तेरे प्रसन्न दर्शन से माथे पर तिलक सजता है।  
जो तेरी मधुर वाणी को समझता है,  
उसे मानव जीवन में कभी दुख नहीं सताता।  
तेरी सदा ही जय हो[2]

कुंडलिनी शरीर में छुपी हुई है,  
तेरे स्पर्श मात्र से, हे जननी, वह जागृत हो जाती है।  
कलियुग में, हे माता, तेरी लीलाएँ अद्भुत हैं,  
तेरा अवतरण, हे देवी, इस धरती को पावन बना देता है।  
तेरी सदा ही जय हो [3]

मानव कल्याण के लिए तेरा सारा जीवन समर्पित है,  
तेरा शरीर जैसे चंदन, धीरे-धीरे घिसता रहा।  
तेरे चरणों को जिसने एक बार पकड़ लिया,  
वह कभी उन्हें छोड़ नहीं सकता – "मधुकर" कहता है, तूने मुझे उद्धार दिया!  
तेरी सदा ही जय हो[4]

॥ ॐ नमो भगवती माताजी निर्मलादेवी ॐ ॥

# आरती

( चाल : आरती ज्ञानराजा... )

आरती तूझी गातां । निर्मळा देवी माता ॥  
होई दूरी सारी चिंता । लाभती सत्य वाटा ॥ धृ० ॥

सदां मुखीं तूझे नाम । हैची साधकाचे काम ॥  
तुझ्या ठायीं पुण्यधाम । लाभे आम्हां अनाथां ॥ १ ॥

तुझे गुण वर्ण कैसे । दिव्य ते तेज दिसे ॥  
तुझे रूप जणूं भासे । जैसी रामाची सीता ॥ २ ॥

तंव ठायीं ध्यान राहे । आई जगताची आहे ॥  
कलियुगीं जशी वाहे । भासे गंगा सरीता ॥ ३ ॥

भाग्य तुझिया हातां । आम्हां उद्धारी आतां ॥  
योग सहज करितां । होई ज्ञानाचा साठा ॥ ४ ॥

आम्हीं जन संसारी । चित्त चंचल हे भारी ।  
दारी आलो माम्हां तारी । मधु राही दंग गीतां ॥ ५ ॥

# Aarti

(Tune: "Aarti Gyanaraja...")

Singing Your Aarti, O Nirmala Devi Mata,  
All worries fade away, and the path of truth is revealed.  
[Chorus]

Your name should always be on our lips,  
This is the true duty of a seeker.  
In You resides the abode of virtue,  
A refuge for us, the helpless ones. [1]

How can I describe Your glory?  
Your divine radiance shines brilliantly.  
Your form appears as luminous  
As Sita, the consort of Lord Rama. [2]

Meditation upon You remains constant,  
For You are the Mother of the universe.  
In this Kali Yuga, You flow  
Like the sacred waters of the Ganga. [3]

Our fate lies in Your hands,  
Now, uplift us and grant us liberation.  
Through Sahaja Yoga, effortlessly,  
We attain the wealth of true knowledge. [4]

We are worldly beings,  
Our minds restless and wavering.  
We come to Your door—O Mother, uplift us!  
Madhukar remains absorbed in Your song. [5]



# आरती

(चाल: "आरती ज्ञानराजा...")

तेरी आरती गाते हैं, निर्मला देवी माता,  
सारी चिंताएँ दूर होती हैं, सत्य का मार्ग मिलता है। [धृ०]

तेरा नाम सदा हमारे मुख पर रहे,  
यही तो साधक का कर्तव्य है।  
तेरे ही चरणों में पुण्यधाम है,  
जहाँ हम जैसे अनाथों को आश्रय मिलता है। [1]

तेरे गुणों का वर्णन कैसे करें?  
तेरा दिव्य तेज स्पष्ट दिखाई देता है।  
तेरा रूप वैसा ही प्रतीत होता है,  
जैसे भगवान राम की सीता। [2]

तेरा ध्यान सदा मन में बसा रहता है,  
क्योंकि तू ही इस जगत की माँ है।  
कलियुग में तू ऐसे प्रवाहित होती है,  
जैसे पवित्र गंगा की धारा। [3]

हमारा भाग्य तेरे ही हाथों में है,  
अब हमें उध्दार कर, हे माता!  
सहज योग के माध्यम से  
हम सच्चे ज्ञान का खजाना पा लेते हैं। [4]

हम संसार में भटके हुए लोग हैं,  
मन हमारा चंचल और बेचैन है।  
तेरे द्वार पर आए हैं, हमें तार दे!  
मधुकर तेरा भजन गाने में मग्न है। [5]

॥ नमस्काराष्टक ॥

हे श्रीगणेशा तुझी धन्य लीला । तुझ्या कृपे ज्ञान ते भाविकाला ॥  
जी दैवीशक्ती रमे मानवात । त्या थोर माताजींना जोडूं हात ॥ १ ॥

जे या प्रपंचात रमलेत जीव । त्यांच्या सुखां देई मक्तिची ठेव ॥  
जी आत्मजानां करीते समर्थ । त्या थोर माताजींना जोडू हात ॥२॥

कोणी म्हणे लक्ष्मीचे आहे दर्शन । 'माँ' ही भवानी म्हणती तिला जन ॥  
जे कार्य केले तया नाही अंत । त्या थोर माताजींना जोडू हात ॥३॥

दे ज्ञानभक्तां "सहज योग" द्वारे । उद्धारिले भक्त मातेनें सारे ॥  
ज्या शक्तिचे कार्य आहे अनंत । त्या थोर माताजींना जोडू हात ॥ ४ ॥

जे जे कुणां द्यावयाचे ते दिले । दानाचे द्वार सदाकाळ खुळे ॥  
जी आजवर मानवां आली देत । त्या थोर माताजींना जोडू हात ॥ ५ ॥

डोळ्यातही तेज ते दिव्य आहे । साक्षात देबीच जाग्रत राहे ॥  
ज्या शक्तिचे रूप बदले क्षणात । त्या थोर माताजींना जोडू हात ॥ ६ ॥

कनवाळू मातेवा मायाळू हात । फिरतो जयावर ती घन्य पाठ ॥  
जी भाविकांच्या बसे अंतरात । त्या थोर माताजींना जोडू हात ॥ ७ ॥

यावे प्रथम भक्तिमार्गे रमावे । त्यानंतरी आईला ओळखावे ॥  
केली " मधूची" लक्ष्मीशी भेट । त्या थोर माताजींना जोडूं हात ॥ ८ ॥

जनता जनार्दन जर्गी जागविला ।  
संसार सारा सुख शोभविला ॥  
भजनीं भजा भक्तहो भगवतीला ।  
नमस्कार नमस्कार नारायणीला ॥

# Namaskarashtak (Eight Verses of Salutation)

Oh Shri Ganesha, your divine play is truly wondrous,  
By your grace, the devoted attain true knowledge.  
The divine power that resides within humans,  
To that great Mataji, we fold our hands in reverence. [1]  
Those who are engrossed in worldly affairs,  
Are blessed with liberation and true joy.  
She empowers the seekers of the Self,  
To that great Mataji, we fold our hands in reverence. [2]  
Some call her Lakshmi, the goddess of prosperity,  
Others refer to her as Bhavani, the divine Mother.  
Her work is endless, eternal, and boundless,  
To that great Mataji, we fold our hands in reverence. [3]  
She grants wisdom and devotion through Sahaja Yoga,  
Lifting all her devotees to liberation.  
Her divine power is limitless, infinite,  
To that great Mataji, we fold our hands in reverence. [4]  
She has always given whatever is meant to be given,  
Her door of generosity forever remains open.  
She has been bestowing blessings upon humanity,  
To that great Mataji, we fold our hands in reverence. [5]  
Her eyes radiate divine brilliance,  
The Goddess herself remains ever awakened.  
Her form transforms in an instant,  
To that great Mataji, we fold our hands in reverence. [6]  
A compassionate Mother, her hands are full of love,  
She protects and blesses those who seek her refuge.  
She forever dwells in the hearts of her devotees,  
To that great Mataji, we fold our hands in reverence. [7]  
First, immerse yourself in the path of devotion,  
Then, you will truly recognize the Mother.  
"Madhukar" has now united with Lakshmi,  
To that great Mataji, we fold our hands in reverence. [8]

**She has awakened the divine within all people,  
Bringing joy and harmony to the world.  
O devotees, worship Bhagavati in your hearts,  
We bow, we bow to Narayani with deep reverence.**

## नमस्काराष्टक (आठ श्लोकों में वंदना)

हे श्री गणेशा, धन्य है तेरी लीला,  
तेरी कृपा से भक्तों को ज्ञान की प्राप्ति होती है।  
जो दिव्य शक्ति मानव में समाई है,  
उन महान माताजी को हम नमन करते हैं। [1]

जो इस संसार में माया में लिप्त हैं, उन्हें तू सच्चे सुख का अनुभव कराती है।  
जो आत्मा के पथिकों को सामर्थ्य देती है, उन महान माताजी को हम नमन करते हैं। [2]

कोई कहे, यह लक्ष्मी का स्वरूप है, तो कोई इसे भवानी माँ कहता है।  
इनके कार्यों का न कोई अंत है, उन महान माताजी को हम नमन करते हैं। [3]

"सहज योग" के माध्यम से ज्ञान और भक्ति दी, सभी भक्तों का उद्धार माता ने किया।  
इनकी शक्ति का कार्य अनंत है, उन महान माताजी को हम नमन करते हैं। [4]

जो भी देना था, वह सब दे दिया, दान का द्वार सदा खुला रखा।  
जो सदा से ही मानवता को देती रही, उन महान माताजी को हम नमन करते हैं। [5]

उनकी आँखों में दिव्य तेज है, स्वयं देवी सदैव जाग्रत रहती हैं।  
जो पल भर में अपना रूप बदल सकती हैं, उन महान माताजी को हम नमन करते हैं। [6]

स्नेहमयी माता के करुणामय हाथ,  
भक्तों की रक्षा में सदा तत्पर हैं।  
जो भक्तों के हृदय में सदैव निवास करती हैं,  
उन महान माताजी को हम नमन करते हैं। [7]

पहले भक्ति मार्ग में लीन हो जाओ,  
फिर माँ की महिमा को पहचानो।  
"मधु" ने लक्ष्मी माँ से साक्षात्कार किया,  
उन महान माताजी को हम नमन करते हैं। [8]

**जन-जन में ईश्वर तत्व को जाग्रत किया,  
इस संसार को आनंद और शोभा से भर दिया।  
हे भक्तों, भगवती का सुमिरन करो,  
नमन, नमन हो नारायणी को।**

## प. पू. माताजी निर्मलादेवी यांची बहुमोल वाणी

### "सहज योग"

आनंद आणि सुख यांचा शोध घेत जाणारा माणूस स्वतःला सोडून त्रिभुवन पालथे घालीत राहतो, हे विचित्र नव्हे काय? आपणच आनंदनिधान आणि सुखाचा अभिजात निर्झर आहो, हे त्याला उमगत नाही, हेच खरे.

स्वतःची स्वतःला अजिबात ओळख नसल्याने आपण म्हणजे एक रूपहीन आणि केवळ वैताग असणारे आहोत, असेच त्याला जाणवत राहते. आनंदाचा शोध माणूस घेतो तरी कशा कशांत? कोणी पैशांत, कोणी मालमत्तेत, कोणी सत्ता संपादनात, अथवा मर्यादित मानवी प्रेमभावनेत किंवा फारच झाले तर धर्मात. पण या धार्मिक गोष्टीसुद्धा सगळ्या मानवाच्या बाह्य उपाधी आहेत, अगदी धार्मिक गोष्टीं देखील.

त्याचा हा शोध बाहेर चालू असतो. अशा माणसाचे अवधान त्याच्या अंतरंगाकडे कसे वळवायचे, हीच मुख्य समस्या आहे. हे अंतरंगातील अस्तित्व म्हणजे "जागृती." ही जागृती चैतन्यरूप असते. (ईश्वरी प्रेमाचा चैतन्यरूप साक्षात्कार असे मी तिचे वर्णन करते.)

ईश्वरी प्रेमाच्या सर्वश्रेष्ठ चैतन्यशक्तीकडून जसे ज्या प्रकारचे मार्गदर्शन मिळते, त्या प्रकारे भौतिक उत्साहशक्ती कार्यप्रवण होऊन तिचा आविष्कार आणि भौतिक उत्क्रांती याचे दर्शन घडते. ही अज्ञात चैतन्यशक्ती किती विचारी आणि केवढी शक्तिमान आहे, याची आपणास माहिती नाही.

मुळीच गाजावाजा न करता कार्यप्रवण असणाऱ्या या जागृतीची चलनवलने अशा सूक्ष्मतेने, प्रेरकतेने, व्यापकतेने आपोआप होत असतात की, ते सर्व गृहीत आहे असेच आपण धरून चालतो.

या चैतन्याचा साक्षात्कार झाल्यानंतर (Self-Realization) निःशब्द अशा चैतन्य लहरीच्या स्वरूपात ते प्रथम दिसते, प्रकट होते. कोणत्याही निराकारावर आपले चित्त आपणास खिळवून ठेवता येत नाही. त्यामुळे आपले लक्ष अशा कोणत्या तरी स्वरूपात प्रतीत होणाऱ्या गोष्टीच्याच शोधात असते.

तेव्हा हे जे चैतन्य किंवा हा जो ईश्वरीशक्तीचा साक्षात्कार, जो प्राप्त करून घेण्याची पद्धती आता शोधून काढली गेली आहे, हा ईश्वरीशक्तीचा साक्षात्कार म्हणजेच आनंद. यालाच "सहज योग" असे नाव आहे.

## **Her Holiness Shri Mataji Nirmala Devi's Precious Words**

### **"Sahaja Yoga"**

Isn't it strange that a person, in search of joy and happiness, turns the entire universe upside down while completely ignoring themselves? The truth is that they fail to realize that they themselves are the very source of joy and the pure fountain of happiness.

Since one has absolutely no self-awareness, they feel as if they are formless and merely burdened with restlessness. But where does a person seek happiness? Some look for it in wealth, some in property, some in acquiring power, others in limited human emotions of love, and at most, in religion. However, even religious practices are just external identifications of humanity, just like other worldly attributes.

Their search continues outward. The real challenge is how to turn such a person's attention inward. This inner existence is called "awakening." This awakening is in the form of Chaitanya (divine consciousness). (I describe it as the realization of divine love in its conscious form.)

The supreme divine consciousness, which is the essence of divine love, provides guidance in different ways. Accordingly, the physical energy is awakened, leading to its manifestation and the visible evolution of matter. We have no idea how profoundly intelligent and powerful this unknown divine energy is.

This awakening operates in an extremely subtle, inspiring, and all-encompassing manner, without any display or announcement. It functions so naturally that we take it for granted.

After the realization of this divine energy (Self-Realization), it first appears as silent waves of Chaitanya and then reveals itself. One cannot focus their mind on something formless, so they instinctively seek something in a perceivable form.

Thus, this Chaitanya, or the realization of divine energy, is now accessible through a method that has been discovered. This realization of divine energy is true joy. This is what is known as "Sahaja Yoga."

प. पू. माताजी निर्मला देवी की बहुमूल्य वाणी

## "सहज योग"

क्या यह अजीब नहीं है कि आनंद और सुख की खोज में मनुष्य पूरे ब्रह्मांड को छान मारता है, लेकिन स्वयं को ही भूल जाता है? सत्य तो यही है कि वह यह नहीं समझ पाता कि वह स्वयं ही आनंद का स्रोत और सुख का शुद्ध झरना है।

स्वयं को न पहचानने के कारण, वह स्वयं को एक रूपहीन और निराश व्यक्ति के रूप में अनुभव करता है। लेकिन मनुष्य आनंद की खोज करता ही किसमें है? कोई इसे धन में ढूंढता है, कोई संपत्ति में, कोई सत्ता के अधिग्रहण में, कोई सीमित मानवीय प्रेम में, और कुछ तो धर्म में भी तलाश करते हैं। परंतु ये सभी धार्मिक गतिविधियाँ भी मानव की बाहरी पहचान मात्र हैं, यहां तक कि धार्मिक साधनाएँ भी।

मनुष्य की यह खोज बाहरी दुनिया में ही चलती रहती है। असली समस्या यह है कि उसके ध्यान को उसके अंतरतम की ओर कैसे मोड़ा जाए। यह अंतरतम का अस्तित्व ही "जागृति" कहलाता है। यह जागृति चैतन्यस्वरूप होती है। (मैं इसे ईश्वरीय प्रेम की चैतन्यस्वरूप अनुभूति कहती हूँ।)

ईश्वरीय प्रेम की सर्वोच्च चैतन्य शक्ति से जैसे-जैसे मार्गदर्शन प्राप्त होता है, वैसे ही भौतिक ऊर्जा सक्रिय होकर प्रकट होती है और उसकी अभिव्यक्ति के रूप में भौतिक विकास दिखाई देने लगता है। यह अज्ञात चैतन्य शक्ति कितनी बुद्धिमान और कितनी शक्तिशाली है, इसका हमें जरा भी ज्ञान नहीं है।

बिल्कुल बिना किसी प्रचार के, यह जागृति अत्यंत सूक्ष्म, प्रेरणादायक और व्यापक रूप से कार्यरत रहती है। यह इतनी स्वाभाविक रूप से कार्य करती है कि हम इसे सामान्य रूप से स्वीकार कर लेते हैं।

इस चैतन्य का साक्षात्कार (Self-Realization) प्राप्त होने के बाद, यह सबसे पहले शब्दहीन चैतन्य तरंगों के रूप में प्रकट होता है। किसी निराकार पर ध्यान केंद्रित करना आसान नहीं होता, इसलिए मनुष्य का मन किसी साकार रूप में ही उसे खोजने का प्रयास करता है।

अब यह जो चैतन्य या ईश्वरीय शक्ति का अनुभव प्राप्त करने की विधि खोजी गई है, यही सच्चा आनंद है। इसे ही "सहज योग" कहा जाता है।

## श्रीदत्तजयंती (ता. ९-१२-७३) रोजी स्वामी गगनगिरी महाराजांनी भाविकांना गगनगडावर दिलेला संदेश केवलता आणि शांतिमार्ग

अपार संख्येने दत्तजयंतीकरिता इथे जमलेल्या तुम्हा प्रत्येकाला मला विचारायचे आहे—खरेच का तुम्ही जीवनाच्या मूलभूत समस्येवर विचार केला आहे? मनापासून तुम्हांला योगामागे धावायचे आहे का? उदात्त जीवनाची अनुभूती हवी आहे का?

तर मग हे लक्षात घ्या की, तुमचा मार्ग इतरांहून वेगळा आहे. तो तुम्हांलाच शोधावा लागेल.

खऱ्या आनंदाखेरीज सगळे काही आजच्या माणसाला मिळाले आहे. सुखाची खेळणी विज्ञानाने आपल्यापुढे टाकली, पण खरा आनंद हे मृगजळच राहिले. रावणाची सोन्याची लंकादेखील जळून खाक झाली, कारण मुळातच तो एक असंतुष्ट आत्मा होता.

सुख ही एक मनाची दृष्टी आहे. स्वयंभू मानव आत्मतखी असतो. तो अनंत कालाशी अनुसंधान ठेवू शकतो. असंतुष्टता आणि लालसा म्हणजे शाप. व्यक्तीकडून समाजाकडे, समाजाकडून विश्वाकडे आपल्या न संपणाऱ्या इच्छा प्रवास करतात, त्यामुळे मन थकते आणि अंतर्द्वंद्व निर्माण होतात.

वास्तवाचा डोळसपणे विचार आणि स्वीकार करायला आपण शिकूया. गरजांचे गाठोडे म्हणजे सुख नव्हे. गरज आणि लालसा यात जमीन-अस्मानाचा फरक आहे. इच्छेच्या पलीकडचा अर्थ प्रत्येकाने पकडला पाहिजे.

मला असे वाटते की, भौतिक ऐश्वर्य वाढायला लागले की निर्भेळ आनंदापासून आपण दूर जाऊ लागतो. वासनामय जीवनाचा शेवट निराशेत होतो. या उलट, आशेच्या जंजाळातून मुक्त असे जीवन अर्थमय ठरते.

या गडावरील धुक्याइतकीच दुःखे आणि वेदना धूसर असतात. मानवात अंतःप्रेरणा नसल्याने दुःख त्याच्यावर स्वार होते. दुःखाचा अर्थबोध होताच त्याला आत्मज्ञान होते.

योगाच्या भाषेत बोलायचे तर संकटे संधी निर्माण करतात. अनेक माणसे आपल्या दुःखाकरिता दुसऱ्याला दोष देतात, त्यांच्यावर टीका करतात.

खरे सांगायचे तर दुसऱ्यांच्या उणीवा उदार अंतःकरणाने सहन करायला पाहिजेत. दुसऱ्याची दुःखे स्वतःत सामावण्याची कला म्हणजेच योग.

तडकाफडकीच्या इलाजाकरिता गडावर येणाऱ्यांची गर्दी फार. मूलभूत समस्येवर प्रश्न विचारणारा असा एकादाच. येथे येणारे गरीब शेतकरी आणि धनाढ्य श्रीमंत—दोषेडी आत्मवंचनेत फसलेले, आंधळेपणाने मायेच्या जाळ्यात अडकलेले. आत्मज्ञान आणि प्रेमाचा ओलावा यांच्या अभावामुळे त्यांचे जीवन वैराण वाळवंट भासते.

क्षणाक्षणांनी जीवनाचे धागे विणले जातात. ज्याला क्षणांचे सौंदर्य भावते, त्याला स्वर्ग आणि पृथ्वीच्या संगीतातील सुसंगती कळते. आणि मग विश्वाची लय जाणवते. उत्पत्ती ही शब्दापलीकडची स्थिती आहे. पण अशा अनुभवांचे मोजमाप जर तुम्ही करीत बसलात, तर पुन्हा एकदा जगाच्या चिखलात आणि कोलाहलात तुम्ही याल. सद्भावनांची संस्कृती म्हणजेच खरा योग. अलिप्ततेचा परमोच्च गाठा. शांती हाच स्थायीभाव ठेवा. शांततेत अपार शक्ती आहे. आशेची वर्तुळे छेदून जाणाऱ्या जीवाला ईश्वरी वरदान कळते. असा आत्मा केवल असतो. त्याचे जीवनघरटे ईश्वरी प्रेरणेने बांधले जाते.

या भारतवर्षात शतकानुशतके आपल्या थोर साधुपुरुषांनी अहिंसा आणि करुणा यांची थोर शक्ती सिद्ध करून दाखविली आहे. त्यांचे शांत जीवन खऱ्या मैत्री व शांतीचे वातावरण निर्माण करू शकले.

शांती आणि आनंदाने जागा झालेला जीवात्मा विश्वाला मार्गदर्शक होतो. जीवन त्याच्या माध्यमातून एक नवे स्वप्न धारण करते. हा मुक्तात्मा कृतीवाचून कृतिशील असतो. शब्दावाचून तो तत्त्वबोध करतो. इतरांकरिता जगतानाच तो आत्मसंपन्न होतो. त्याच्या हातून सर्व घडते, पण त्याचे श्रेय मात्र तो घेण्यास तयार नसतो. जीवनाचे महान गुपित जाणण्यासाठी तो वासनेची लक्करे टाकून देतो.

स्वयंभू ताज्याप्रमाणे त्याचे अस्तित्व हेच मानवजातीचे वरदान!

~ स्वामी गगनगिरी महाराज



## **Message Given by Swami Gagangiri Maharaj to Devotees at Gagangad on the Occasion of Shri Dattajayanti (9-12-73)**

### **Solitude and the Path of Peace**

To each one of you gathered here in vast numbers for Dattajayanti, I ask—have you truly reflected on the fundamental problems of life? Do you sincerely wish to pursue Yoga? Do you long for the experience of a higher way of living?

If so, understand this: your path is different from others. It is a path that you alone must seek and discover.

Today, man has gained everything except true joy. Science has placed the toys of comfort before us, yet real happiness remains a mirage. Even Ravana's golden Lanka was reduced to ashes because, at his core, he was a restless and dissatisfied soul.

Happiness is a state of mind. A self-realized soul is content within and remains connected to eternity. Discontentment and desires are curses. Our unending wants travel from individuals to society and from society to the universe, exhausting the mind and creating inner conflict.

Let us learn to observe reality with clarity and accept it with wisdom. A bundle of material needs does not constitute happiness. There is a vast difference between need and greed. Each one must grasp the meaning that lies beyond mere desire.

I believe that as material wealth increases, we drift further away from pure joy. A life driven by indulgence ends in despair. In contrast, a life freed from the entanglement of expectations finds meaning.

Sufferings and pains are as transient and vague as the mist on this hill. Due to a lack of inner awareness, suffering takes hold of man. But the moment he understands its meaning, he attains self-knowledge.

In the language of Yoga, challenges create opportunities. Many people blame others for their suffering, criticize them, and dwell on their faults. The truth is, we must cultivate the generosity to accept others' shortcomings with a kind heart. The ability to absorb others' suffering within oneself—that is Yoga.

A great crowd gathers on this hill seeking quick remedies, but only a rare seeker questions the deeper issues of life.

Among those who come here—whether poor farmers or wealthy individuals—many remain trapped in self-deception, blinded by the illusions of attachment. Lacking self-knowledge and the warmth of love, their lives feel like barren deserts. Life is woven moment by moment. One who appreciates the beauty of each instant understands the harmony between heaven and earth, sensing the rhythm of the universe. Creation lies beyond words, but if you attempt to measure such experiences, you will once again fall into the chaos and mire of the world.

The culture of goodwill is the true essence of Yoga—the highest pinnacle of detachment. Maintain peace as your constant state, for peace holds boundless power. The soul that transcends the circles of hope realizes the divine gift. Such a soul exists in pure solitude, and his life is shaped by divine inspiration.

For centuries, the great sages of India have demonstrated the immense power of non-violence and compassion. Their peaceful lives fostered an atmosphere of true friendship and harmony.

A soul awakened by peace and joy becomes a guiding light for the world. Life, through him, embraces a new vision. This liberated soul is active without action, teaches without words, and, while living for others, remains fulfilled within.

Everything happens through him, yet he claims no credit. To understand the great mystery of life, he renounces the tattered garments of desire. Like the self-sustaining peaks, his very existence is a blessing to mankind!

**~ Swami Gagangiri Maharaj**

## श्री दत्त जयंती (09-12-73) के अवसर पर स्वामी गगनगिरी महाराज द्वारा गगनगढ़ पर भक्तों को दिया गया संदेश एकांत और शांति का मार्ग

आप सभी, जो अपार संख्या में दत्त जयंती के अवसर पर यहाँ एकत्र हुए हैं, मैं आपसे पूछना चाहता हूँ—क्या आपने वास्तव में जीवन की मूलभूत समस्याओं पर विचार किया है? क्या आप सच्चे मन से योग के मार्ग पर चलना चाहते हैं? क्या आपको एक उच्चतर जीवन का अनुभव प्राप्त करना है?

यदि हाँ, तो यह समझ लें कि आपका मार्ग दूसरों से अलग है। यह मार्ग आपको स्वयं खोजना होगा। आज के मानव को सब कुछ प्राप्त हुआ है, बस सच्चे आनंद को छोड़कर। विज्ञान ने सुख-सुविधाओं के खिलौने हमारे सामने रख दिए हैं, लेकिन वास्तविक आनंद अब भी एक मृगतृष्णा बना हुआ है। रावण की स्वर्ण नगरी लंका भी जलकर राख हो गई क्योंकि वह मूलतः एक असंतुष्ट आत्मा था। सुख एक मानसिक दृष्टिकोण है। आत्मज्ञानी व्यक्ति स्वयं में पूर्ण होता है और अनंत काल से जुड़ा रहता है। असंतोष और लालसा एक अभिशाप हैं। हमारी इच्छाएँ व्यक्ति से समाज तक और समाज से विश्व तक निरंतर यात्रा करती रहती हैं, जिससे मन थक जाता है और आंतरिक संघर्ष उत्पन्न होते हैं।

हमें वास्तविकता को स्पष्ट रूप से देखना और उसे स्वीकार करना सीखना चाहिए। आवश्यकताओं का बोझ ही सुख नहीं है। आवश्यकता और लालसा के बीच आकाश-पाताल का अंतर है। हमें उन इच्छाओं से परे के सत्य को समझना चाहिए। मुझे ऐसा लगता है कि जैसे-जैसे भौतिक संपन्नता बढ़ती है, हम सच्चे आनंद से दूर होते जाते हैं। वासनामय जीवन का अंत केवल निराशा में होता है। इसके विपरीत, आशा के बंधनों से मुक्त जीवन ही अर्थपूर्ण बनता है।

इस पर्वत पर फैले कोहरे की तरह ही दुख और पीड़ा भी धुंधली होती हैं। मनुष्य में यदि आंतरिक प्रेरणा न हो, तो दुख उस पर हावी हो जाता है। लेकिन जैसे ही वह अपने दुख का सही अर्थ समझता है, उसे आत्मज्ञान प्राप्त होता है।

योग के दृष्टिकोण से, संकट अवसर पैदा करते हैं। बहुत से लोग अपने दुखों के लिए दूसरों को दोष देते हैं और उनकी आलोचना करते हैं।

सच तो यह है कि हमें दूसरों की कमियों को उदार हृदय से स्वीकार करना चाहिए। दूसरों के दुखों को अपने भीतर समाहित करने की कला ही योग है। जल्द समाधान की तलाश में यहाँ आने वालों की भीड़ बहुत अधिक है, लेकिन जीवन की मूलभूत समस्याओं पर प्रश्न करने वाला कोई एक-दो ही होते हैं।

यहाँ आने वाले गरीब किसान हों या धनाढ्य अमीर—अधिकांश आत्मवंचना में उलझे हुए हैं, मोह-माया के जाल में अंधे होकर फंसे हुए हैं। आत्मज्ञान और प्रेम की मधुरता के अभाव में, उनका जीवन एक उजाड़ रेगिस्तान सा प्रतीत होता है।

क्षण-क्षण से जीवन की बुनावट होती है। जो व्यक्ति हर क्षण की सुंदरता को अनुभव करता है, वह स्वर्ग और पृथ्वी की संगीतात्मक संगति को समझता है, और तब उसे पूरे ब्रह्मांड की लय का आभास होता है। सृजन शब्दों से परे की स्थिति है, लेकिन यदि आप इन अनुभवों को मापने का प्रयास करते हैं, तो आप फिर से संसार के कीचड़ और कोलाहल में लौट आएंगे।

सद्भावना की संस्कृति ही सच्चा योग है—निर्लिप्तता की परम अवस्था।

शांति को अपनी स्थायी स्थिति बनाइए। शांति में असीम शक्ति है। जो जीव आशाओं के चक्र को पार कर जाता है, वह ईश्वरीय वरदान को समझता है। ऐसा आत्मा केवल होता है। उसका जीवन ईश्वरीय प्रेरणा से निर्मित होता है।

इस भारतभूमि में शताब्दियों से हमारे महान संतों ने अहिंसा और करुणा की शक्ति को सिद्ध करके दिखाया है।

उनका शांत जीवन सच्ची मित्रता और शांति का वातावरण बना सका।

शांति और आनंद से जाग्रत जीव आत्मा संपूर्ण विश्व के लिए मार्गदर्शक बन जाती है। जीवन उसके माध्यम से एक नई दृष्टि प्राप्त करता है।

यह मुक्त आत्मा कर्म किए बिना भी कर्ता होता है। वह शब्दों के बिना भी तत्त्वज्ञान का उपदेश देता है।

दूसरों के लिए जीते हुए भी वह आत्मसंपन्न होता है।

सब कुछ उसके माध्यम से घटित होता है, लेकिन वह कभी इसका श्रेय लेने को तैयार नहीं होता।

जीवन के इस महान रहस्य को समझने के लिए, वह वासनाओं के पुराने वस्त्र त्याग देता है।

स्वयंभू पर्वतों की तरह, उसका अस्तित्व ही मानव जाति के लिए एक वरदान होता है!

~ स्वामी गगनगिरी महाराज

प्रकाशक: कवि मधुकर ठाकुर, 40 कैनरा हाउस, मोगल लेन, माहिम, मुंबई - 16

मुद्रक: शरद कृ. सापळे, रामकृष्ण प्रिंटिंग प्रेस, त्रिभुवन रोड, मुंबई - 4